मोतियाबिंद (CATARACT)

बिना टाँके का अत्याधुनिक ऑपरेशन (फेको-इमल्सीफिकेशन)

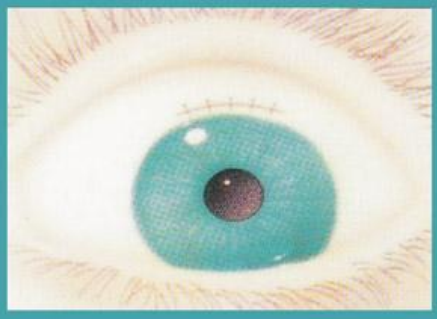

Conventional Large Incision
(परंपरागत सर्जरी)

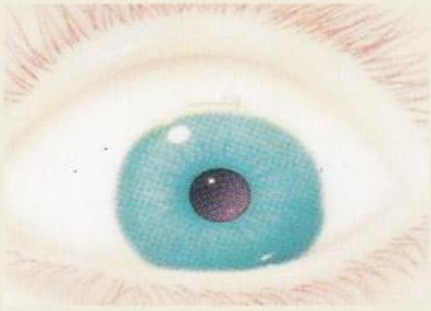

Small Phaco Incision
(फेको-सर्जरी)

NURSING VISION

RAJAS
EYE & RETINA RESEARCH CENTRE

सामान्य जानकारी

फेकोइमल्सीफिकेशन मोतियाबिंद ऑपरेशन की विश्व मान्यता प्राप्त आधुनिक पद्धति है।
फेकोइमल्सीफिकेशन मशीन एक इलेक्ट्रानिक मशीन है जो कम्प्यूटर द्वारा संचालित की जाती है। जहाँ एक और एक्स्ट्राकेप्सुलर पद्धति में मोतियाबिंद के न्यूक्लियस को निकालने के लिए आँख में 12 मि.मि. का चीरा लगाना पड़ता है, वहीं फेकोइमल्सीफिकेशन में 3 मि.मि. की टनल द्वारा मोतियाबिंद को पाउडर में बदलकर सोख लिया जाता है। इसी टनल से कृत्रिम लैंस सिरीज की सहायता से प्रत्यारोपित कर दिये जाते है।

फेकोइमल्सीफिकेशन सर्जरी के फायदे :

1. मात्र 10 मिनट के ऑपरेशन के बाद मरीज दो घंटे बाद हॉस्पिटल से छुट्टी ले सकता है।
2. इस पद्धति से आँखों में बाद में आने वाली समस्याओं (जैसे- आँखों में पस पड़ना, सूजन आना, घाव व टाँकों का खुल जाना), की संभावना बहुत कम रहती है।
3. कम सावधानी के बाद भी घाँव छोटा होने के कारण जल्दी भर जाता है।
4. आँख में पानी नहीं लगाना, करवट न लेना आदि परहेज की जरुरत नहीं होती।
5. सिलीन्ड्रीकल नम्बर बहुत कम आता है, जिसके कारण रोशनी साफ होती है।
6. डायबिटीज, अस्थमा आदि मरीजों के लिए भी अत्यंत फायदेमंद पद्धति है।

मोतियाबिंद से प्रभावित दृष्टि	स्वस्थ दृष्टि

कृत्रिम लेंस प्रत्यारोपण:

कृत्रिम लैंस इस तरह के पावर और डिजाइन के होते हैं कि ह्यूमन लैंस (प्राकृतिक लैंस) की जगह काम आ सके।

इसके उपयोग से वे सब तकलीफें जो अब तक बिना लैंस के मोतियाबिंद के आपरेशन के बाद आती थी, अब दूर की जा सकती है। जैसे-आपरेशन के बाद मोटा चश्मा (हाई प्लस पावर) लगाना पड़ता है। उसकी वजह से सभी वस्तुएँ 25% बड़ी दिखाई देती हैं। दूर की वस्तुएँ पास दिखाई देती हैं।

यदि एक आँख का आपरेशन हुआ है और दूसरी आँख सामान्य है तो एक वस्तु दो-दो दिखाई देती है। मोटे चश्में की वजह से मरीज को आसपास की वस्तुएँ देखने के लिये पूरी गर्दन घुमानी पड़ती है। वस्तुएँ आड़ी तिरछी दिखाई देती हैं। सड़क पार करने में, सीड़ियां उतरने-चढ़ने में, सिलाई, कड़ाई, बीनने चुनने में, ड्रायविंग करने में तकलीफ आती है। ये सब तकलीफें कृत्रिम लैंस प्रत्यारोपण के बाद नहीं आती है।

कृत्रिम लैंस दो प्रकार के होते है :

NURSING VISION

1. नॉन-फोल्डेबल लेंस
2. फोल्डेबल लेंस

नॉन फोल्डेबल लेंस प्रत्यारोपण में चीरे (Incision) का साईज फोल्डेबल लेंस की तुलना में बड़ा होता है। नॉन फोल्डेबल लेंस में 5.5 m.m. तथा फोल्डेबल लेंस 3.0 m.m. का चीरा लगता है।

नेचरल फोल्डेबल लेंस :- इस लेंस में सूर्य से निकलने वाली ब्लु किरणों (Blue Light Hazard) को रोकने की क्षमता होती है, ताकि AMD (Age Related Macular Degeneration) होने की संभावना को कम कर सके।

आपरेशन के बाद भी दूर और पास के लिये माईनर नम्बर (कम पावर) का चश्मा लगाना पड़ता है। कृत्रिम लैंस के आपरेशन में भी उतने ही काम्पलीकेशन की सम्भावना रहती है जो बिना लैंस के आपरेशन में होती है।

मरीज को कोई दूसरी बीमारी जैसे- काँचबिन्द, पर्दे की बीमारी (रेटिना) न हो और कार्निया साफ हो तो मरीज को साफ दिखाई देता है।

लैंस या बिना लैंस के आपरेशन में मरीज की सुरक्षा की दृष्टि से एक झिल्ली छोड़ दी जाती है। कुछ लोगों में यह कुछ

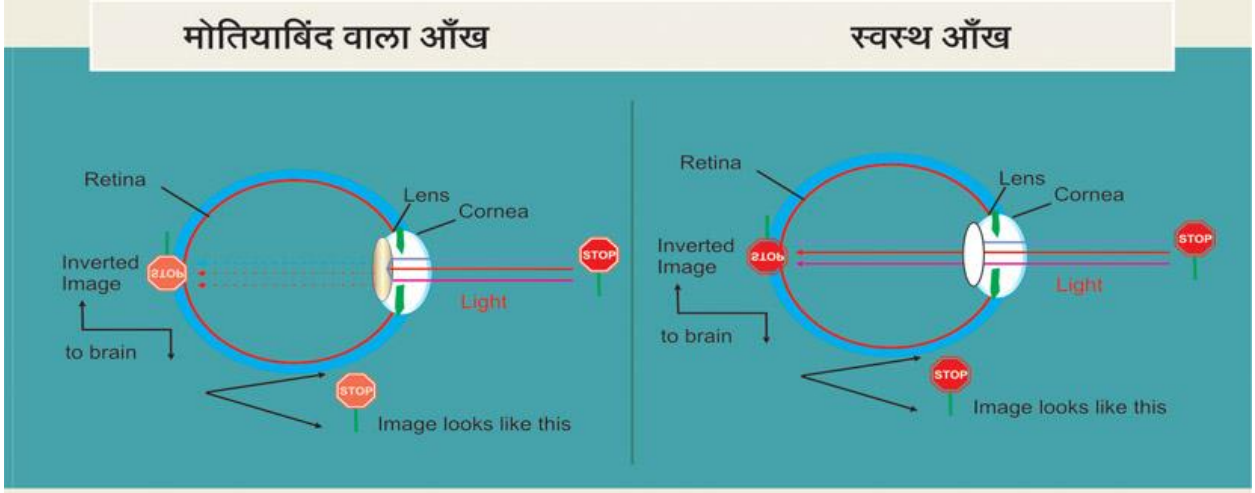

समय बाद सफेद (Deposits) हो जाती है, इसके कारण मरीज को धुँधला दिखाई देने लगता है।

इस झिल्ली को यागलेसर मशीन के द्वारा बिना आपरेशन के या केप्सुल पालिशिंग (Capsule Polishing) विधि द्वारा हटा दिया जाता है और रोशनी फिर से साफ हो जाती है।

इस झिल्ली को सफेद (Deposits) होने की संभावना नान फोल्डेबल लेंस की तुलना में फोल्डेबल लेंस (Acrylic) में काफी कम होती है।

लैंस प्रत्यारोपण डायबिटीज, ब्लडप्रेशर वाले मरीजों में भी किया जा सकता है। पैदाइशी मोतियाबिंद में भी छः महीने से ऊपर तक के बच्चों को लैंस लगाया जा सकता है।

किसी मरीज को किस तरह का लैंस लगाना है और लगाना है या नहीं लगाना है, इसका निर्णय आँख की सोनोग्राफी के बाद लिया जाता है। जिन लोगों का आपरेशन पहले ही बिना लैंस लगाये हो चुका हो, उनको फिर से लैंस लगाया जा सकता है। साथ ही यह आँखों की स्थिति पर भी निर्भर होता है।

नेत्र लैंस प्रत्यारोपण मरीज के लिये सभी तरह से सुरक्षित है ओर यह नेचरल विजन (प्राकृतिक रोशनी) के काफी करीब लाता है।

NURSING VISION

चौधरी नेत्र एवं रेटिना रिसर्च सेन्टर

1, शिव विलास पैलेस, राजबाड़ा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2539595, 2536822

राजस नेत्र एवं रेटिना रिसर्च सेन्टर

152, कंचनबाग, एयरटेल के सामने, इन्दौर